JVC

जनमुख

भगवान महावीर जयंती परिशिष्ट 2026

व्यापार चक्र

भगवान महावीर का अहिंसा का सिद्धांत और वर्तमान दौर!

अहिंसा परमोधर्मः

भगवान महावीर की आरती

भगवन मेरी नैया, उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना
हम दीनदुखी निर्धन, नित नाम जपे प्रतिपल
यह सोच दरश दोगे, प्रभु आज नहीं तो कल
जो बाग लगाया है फूलों से सजा देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।

तुम शांति सुधाकर हो, तुम ज्ञान दिवाकर हो
मुम हंस चुगे मोती, तुम मानसरोवर हो
दो बूंद सुधा रस की, हम को भी पिला देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।

रोकोगे भला कब तक, दर्शन दो मुझे तुम से
चरणों से लिपट जाऊं प्रभु शोक लता जैसे
अब द्वार खड़ा तेरे, मुझे राह दिखा देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।

मंझधार पड़ी नैया डगमग डोले भव में
आओ त्रिशाला नंदन हम ध्यान धरे मन में
अब बस करें विनती, मुझे अपना बना लेना
भगवन मेरी नैया, उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना।

सम्पादकीय

आज महावीर के सिद्धांत और भी जरूरी

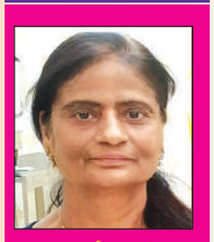

सरोज सिन्हा
समाचार सम्पादक

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती इस बार 31 मार्च 2026 को देशभर में मनायी जा रही है। महावीर स्वामी अहिंसा के मूर्तिमान प्रतीक थे। उन्होंने दुनिया को सत्य- अहिंसा जैसे खास उद्देश्यों के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश की। यही वजह है कि आज महावीर जी का 'जीओ और जीने दो' का सिद्धांत वर्तमान संदर्भों में सभी के लिए प्रासंगिक हैं। और भविष्य के लिए मार्गदर्शक है। आधुनिक समाज जहां हिंसा, पर्यावरण संकट, तनाव और भौतिक दौड़ में जूझ रहा है, वहां महावीर के विचार जीवन को संतुलित और शांत बनाने का मार्ग दिखाते हैं।

आज जब पूरी दुनिया युद्ध, पर्यावरण, प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग की गंभीर चुनौतियों से जूझ रही है तब महावीर के विचार और सिद्धांत केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि हर दृष्टि से एक मजबूत मार्ग दर्शन देते हैं। महावीर जी का 'जीओ और जीने दो' का सिद्धांत जनकल्याण की भावनाओं को परिलक्षित करना है। देखा जाए तो महावीर वास्तव में अहिंसा के मूर्तिमान प्रतीक थे। यहां तक कि वे क्रांतिकारी एवं युगद्रष्टा थे। भगवान महावीर ने स्वयं साधना का जीवन जीया था। वे किसी दर्शन को लेकर नहीं चले। उनका कहना था कि जीव और अजीव के अस्तित्व को अस्वीकार मत करो। सभी जीवों के अस्तित्व को स्वीकार करने वाला ही पर्यावरण और मानव की रक्षा करने के बारे में सोच सकता है। उनका मानना है कि पेड़-पौधे ईश्वर के प्रतिनिधि होते हैं और इनमें भी आत्मा होती है। इसलिए पेड़-पौधे का जीवन भी उतना ही मूल्यवान है जितना मनुष्य का है। विलक्षण व्यक्तित्व के धनी महावीर ने अपने दर्शन एवं उद्देश्यों से मानवीय जीवन के स्तर को सुधारने के लिए हर संभव प्रयास किए। वे कर्म में पूरा विश्वास करते थे। उनका स्पष्ट मत था कि व्यक्ति का भविष्य कर्म ही निर्धारण करता है। आज भी उनके सिद्धान्त विश्व का कल्याण कर सकते हैं। देखा जाए तो आज के दौर में जिस प्रकार से नकारात्मक शक्तियां पूरी दुनिया में तेजी से फैल रही हैं, ऐसे में महावीर के सिद्धान्त और भी प्रासंगिक हैं। आज भगवान महावीर की जयंती मनाना तभी सार्थक होगा, जब हम सभी उनके सिद्धान्तों पर चलें और लोगों को उस पर चलने के लिए प्रेरित करें।

महावीर जयंती पर जैन समाज को 'जनमुख' परिवार की ओर से ढेरों बधाई।

सरोज सिन्हा

जनमुख परामर्श मंडल

एस. कुमार, अध्यक्ष
सिंधी काउंसिल ऑफ इंडिया

संतोष अग्रवाल,
सभापति
श्री काशी अग्रवाल समाज

श्रीनारायण खेमका
अध्यक्ष
अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन

वी.के.जैन, अध्यक्ष
जैन मिलन, वाराणसी

डा. नीलम ओहरी
स्त्री रोग विशेषज्ञ

डा. एस.के.पाठक
वरिष्ठ चिकित्सक

प्रधान सम्पादक
ब्रजेश कुमार राय 'शर्मा'
समाचार सम्पादक
सरोज सिन्हा
फोन : 0542-2500324 9336929544
Email : janmukh.vns@gmail.com
जनमुख हिन्दी दैनिक के लिए निःशुल्क प्रकाशित

एडवांस सेन्टर फार मदर एण्ड चाइल्ड केयर
भगवान महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं
AN ISO 9001 : 2008 CERTIFIED
जैन हास्पिटल

डॉ. के. के. जैन
एम.डी., डी.सी.एच.
एम.सी.सी.पी. (अमेरिका)
फैलोशिप नवजात शिशु रोग
वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ

डॉ. अमित जैन
एम.डी., डी.सी.एच.
नवजात शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ
पूर्व रेजीडेंट कलावती सरन चिल्ड्रेन हास्पिटल, नई दिल्ली

डॉ. अंजू जैन
एम.बी.बी.एस., डी.जी.ओ.
डी.एन.बी. गोल्ड मेडलिस्ट-दिल्ली यूनिवर्सटी
प्रसूति,स्त्री एवं बाझंपन रोग विशेषज्ञ,
पूर्व रेजीडेंट सेंट स्टीफेन हॉस्पिटल, नई दिल्ली

● राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना की सुविधा उपलब्ध।

पाण्डेयपुर, चौराहा, वाराणसी | शाखा कबीरचौरा, वाराणसी
फोन - 0542-3252795 ● E-mail : jainhospital@gmail.com

तीर्थंकर महावीर :क्रान्तिकारी जीवन दर्शन के प्रणेता

प्रो. फूलचंद जैन प्रेमी
वाराणसी

जैनधर्म में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर चौबीसवें व अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थंकरों की एक सुदीर्घ परंपरा विद्यमान है।

इसी परम्परा में तीर्थंकर महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन बिहार राज्य के वैशाली नगर,वासोकुण्ड में 600 ईसापूर्व अर्थात् आज से लगभग दो हजार छह सौ वर्ष पूर्व हुआ था।

काल की दृष्टि से देखा जाए तो महावीर का जन्म जिस क्षेत्र में हुआ था,वहाँ गणतंत्र का वर्चस्व-काल था। आज हमारे देश में भी यही शासन प्रणाली चल रही है। किन्तु उसी युग में वैशाली गणराज्य के अन्तर्गत आने वाले काशी, कौशल आदि अट्ठारह गणराज्यों के अतिरिक्त पूरे बृहत्तर भारतवर्ष में राजा- महाराजाओं के राजतंत्र शासन चल रहे थे। वे प्रायः एक-दूसरे के राज्यों पर अधिकार जमाने तथा अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए परस्पर युद्धों में अपनी शक्ति खर्च करते रहते थे।

इस राजतंत्र से लोकतंत्र तक का पाठ पढ़ाने वाला वैशाली गणराज्य इस विश्व का प्रथम गणराज्य माना जाता है, जहां जनतंत्र गणतंत्र या प्रजातंत्र की शुरुआत हुई। उन्होंने परस्पर सद्भाव और एकता के लिए अहिंसा,अपरिग्रह,अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, सर्वोदय प्रत्येक जीव के लिए कल्याणकारी और समन्वयकारी जैसे अनेक सिद्धान्तों व जीवन मूल्यों को समाज में प्रतिष्ठापित करने हेतु क्रान्तिकारी कार्य किये। यह ऐसी क्रान्ति,जिसे व्यक्तिगत जीवन का अपूर्व पराक्रम कहा जा सके। कथनी और करनी में समानता के प्रबल पक्षधर होने के कारण उनने जो कुछ कहा, उसे उन्होंने करके दिखाया।

वे शान्तिप्रिय थे और अहिंसा में विश्वास रखते थे। अतः अहिंसक समाज रचना के लिए सदा प्रयत्नशील रहे। उनका कहना था कि समाज परिवर्तन के लिए क्रान्ति आवश्यक है, पर वह क्रान्ति अहिंसक हो। उनका मानना था कि जिस क्रान्ति में हृदय परिवर्तन की क्षमता हो, वहीं सबसे बड़ी क्रान्ति है। इसीलिए वे जीवन भर सदा विश्वबन्धुत्व की शिक्षा देते रहे उनने ना तो कभी जातिवाद का समर्थन किया, न सम्प्रदायवाद और न कभी क्षेत्रीयतावाद का। मनुष्य को सदा मनुष्य जाति के रूप में देखा। एक ऐसी जाति के रूप में जिसमें न कोई ऊंच हो, न नीच कोई बड़ा न छोटा वरन पूरा समुदाय स्नेह, सद्भाव, सहयोग, सहकार की धुरी पर खड़ा हो।

वस्तुतः व्यक्ति समाज की इकाई है, इसलिए सबसे पहले इंसान को खुद ही चरित्र निर्माण व सुसंस्कृत होने की जरूरत है। इसके बाद समाज खुद ही सुव्यवस्थित हो जाएगा। इसलिए महावीर उसे समता रूपी धर्म के लिए प्रेरित करते हैं। हर व्यक्ति इसकी तरफ झुकेगा तो परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान अपने आप होगा।

एक संपूर्ण और सफल व्यक्तित्व के लिए हमें भगवान महावीर ने निम्नलिखित सूत्र दिए –1.आचार में अहिंसा,2.विचारों में अनेकांत,3. वाणी में स्याद्वाद और 4.जीवन में अपरिग्रह।

आज जबकि मानव जाति अपनी उत्तरोत्तर वैज्ञानिक तथा प्राविधिक उन्नति होते हुए भी सम्पूर्ण विश्व अनेक प्रकार के संघर्षों से जूझ रहा है। महावीर तीर्थंकर थे और उन गिने-चुने महामानवों में से थे जिन्होंने जीवनके विविध रूपोंके प्रति आदर-भाव रखना - यह मानवीय चरित्रको परखनेकी उनकी सबसे बड़ी कसौटी थी । इसमें हिंसाके लिए कोई स्थान नहीं था, फिर चाहे वह वैचारिकी हिंसा (भाव हिंसा) हो या क्रियारूप हिंसा (द्रव्य-हिंसा)। यही अहिंसाका सिद्धान्त है।

जन्मसे राजकुमार होकर भी महावीर ने जीवनकी उस पद्धति को अपनाया जिसमें मोह और परिग्रहके लिए कमसे कम स्थान था। उन्होंने अपनी इच्छाओं को संयमित तथा आवश्यकताओंको सीमित किया, और इस प्रकार जीवन-मरण की विविध समस्याओं का हल खोज निकाला।

उन्होंने अपरिग्रह का केवल उपदेश ही नहीं दिया, स्वयं अपने जीवनमें भी उतारा। उनके उपदेश उन सभीके लिए हैं जो उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते हैं। बौद्धिक सहिष्णुता अर्थात् दूसरों के दृष्टिकोण को समझना, उनके जीवन-दर्शनका महत्त्वपूर्ण अंग रही है।

उन्होंने जिस अनेकान्तवाद दर्शन की नींव रखी, उस अनेकान्तवाद का शाश्वत सिद्धान्त मानवी विकास और सहअस्तित्व के उन्हीं तथ्यों का प्रतिपादन करते हैं, जो समानता और राष्ट्र की प्रगति के लिए, सुख शान्ति के लिए आवश्यक है।

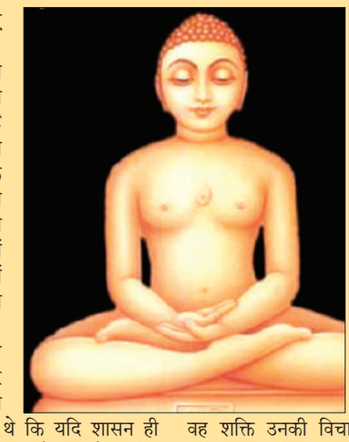

वस्तुतः हमारी बोली हमारे व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण भाग है इसके द्वारा ही हम अपनी प्रभावक अभिव्यक्ति कर पाते हैं। इसीलिए भगवान महावीर ने वाणी में स्याद्वाद और विचारों में अनेकांतवाद की बात समझाई।

आत्मानुशासन को भगवान महावीर सबसे पवित्र शासन मानते थे। वे कहते थे कि यदि शासन ही करना हो तो स्वयं पर करो, अपने शरीर, वाणी, मन और आत्मा पर करों। आत्मसाधना सबसे उत्तम शासन हैं। यदि इससे स्वयं पर अधिकार और नियंत्रण पा सको, तो हर प्रकार से कल्याण ही होगा। इस राह पर लोगों को ले जाने के लिए उनने स्वयं प्रबल साधना की, अपने को कसौटी पर खरा सिद्ध किया और इस प्रकार समाज में मानवी मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए स्वयं प्रेरणा स्रोत बने, तभी वह शक्ति उनकी विचारधारा में आज भी पूरी तरह विद्यमान है। उनके शाश्वत सिद्धान्तों में जीवन को दिशा देने की वही क्षमता आज भी अक्षुण्ण रूप में विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है कि भगवान् महावीर के जीवन और उनके युग के प्रामाणिक तथ्य इस प्रकार प्रस्तुत किये जाएँ, ताकि हम सभी उन्हें भलीभाँति समझ सकें और अपनी सम्पूर्ण क्षमता के साथ उनके सिद्धान्तोंको अपने जीवन में उतारने का मार्ग प्रशस्त कर सकें ।

आज युग उनकी जय गाथा गा रहा है।

उनका जीवन-दर्शन खुली किताब की तरह सार्वकालिक और सार्वभौमिक है. साथ ही चिरप्राचीन और चिरनवीन के सीमा- बन्धन से सर्वथा परे है। जैसी सामर्थ्य और तैजश्विता उनमें तब थी,

भगवान महावीर के 2625 वें जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

संजय जैन

उपाध्यक्ष/अध्यक्ष

भगवान पार्श्वनाथ जन्मस्थली भेलूपुर, वाराणसी

पवन जैन
मंत्री
पार्श्वनाथ जन्मस्थली भेलूपुर, वाराणसी

पंकज जैन
राजेश जैन

भगवान महावीर पर पूर्वी जर्मनी का डाक टिकट

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के एक प्राचीन भारतीय लघु चित्र (संभवतः 15/16वीं शताब्दी) पर आधारित डाक टिकट जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य (DDR/GDR) जिसे पहले पूर्व जर्मनी के नाम से जाना जाता था के द्वारा 2 अक्टूबर 1979 को 35 फेनिंग (DDR की मुद्रा) का जारी किया गया था। टिकट पर नीचे "DEUTSCHE STAATSBIBLIOTHEK BERLIN" यह बताती है कि इस पेंटिंग का मूल हस्तलेख बर्लिन के जर्मन स्टेट लाइब्रेरी में सुरक्षित है। चित्र में महावीर स्वामी को ध्यान मुद्रा में दिखाया गया हैं जो जैन पाण्डुलिपि कला की शैली को दर्शाता हैं।

प्रदेश शासन उ.प्र. की तीर्थ स्थलों को मास-मदिरा मुक्त करें

राकेश जैन
उपाध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन समाज, काशी
महामंत्री, श्री दिगम्बर जैन महासमिति,

जैन समाज के वरिष्ठ प्रतिनिधि व लोकप्रिय व्यापारी नेता राकेश जैन ने एक स्वर में प्रदेश शासन से उत्तर प्रदेश में स्थापित तीर्थ नगरी जैसे काशी, अयोध्या और मथुरा को मास-मदिरा मुक्त करने की मांग की गयी है। प्रमुख समाजसेवी व वरिष्ठ पाध्यक्ष, जैन समाज राकेश जैन ने कहा कि ''जैसा खाओगे अन्न, वैसा होवे मन।'' उन्होंने आगे कहा कि सामान्यतः शाकाहारी व्यक्ति हिंसक नहीं होता उसमें दयादृष्टि यार मोहब्बत और प्रकृति के प्रति प्यार उसके संस्कारों में समाहित होता है। इसके विपरीत मांसाहारी व्यक्ति जब मदिरा का भी सेवन कर लेता है तो उसका विवेक डर समाज के प्रति दायित्व सब गायब हो जाता है। और वो अत्यंत हिंसक हो जाता है। इतिहास गवाह है कि अधिकतर हत्याएं, हत्या करने वाला व्यक्ति मास-मदिरा का सेवन करने के पश्चात ही हत्या को अंजाम देता है। अतः तीर्थनगरियों को मास-मदिरा मुक्त करने से उस शहर के अपराधों में 100 प्रतिशत कमी आएगी। प्रदेश का सौभाग्य यह है कि मुख्यमंत्री के रूप में योगी मिला है तो अब तक तीर्थनगरियों को मांस-मदिरा मुक्त हो जाना चाहिए था। वैसे, अयोध्या मास-मदिरा मुक्त तीर्थस्थली है परन्तु, काशी इस उपलब्धि से छूटे हुए है अतः प्रदेश शासन इस कमी को दूर करें। इसी प्रकार उ.प्र. से मांस का निर्यात तत्काल बंद होना चाहिये। बड़े दुख की बात है कि गोहत्या पर भी रोक है परन्तु, दूसरे जीव का क्या दोष? बकरा- सांड़ को आप क्या कहेंगे। गौ हत्या के साथ ही सभी जीवों की हत्या पर रोक होनी चाहिये। उत्तम स्वास्थ्य का आधार भी शाकाहार है। आप स्वयं देख लें मांसाहारी व्यक्ति के बजाय शाकाहारी व्यक्ति ज्यादा दिन जीवित रहता है। अतः प्रदेश में जीवहत्या बंद होनी चाहिये।

भगवान महावीर के 2625वें
जन्म कल्याणक महोत्सव पर
🙏शत शत् नमन🙏

अरुण जैन
वरिष्ठ उपाध्यक्ष
समाज, काशी

नवकेतन साड़ीज प्रा.लि.
सीके 22/15, प्रथम तल, लखबी चौतरा, चौक, वाराणसी
फोन : 0542-2420218 | 3240005 | 3240004
फैक्स : 0542-2420219

महावीर जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

भगवान महावीर जयंती के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

CENTRE FOR RESEARCH & TREATMENT OF ALLERGY, ASTHMA & BRONCHITIS. एलर्जी अस्थमा एवं ब्रोन्काइटीस रोग अनुसंधान केन्द्र

DR. SAMARIA MULTISPECIALTY CLINIC
MULTI SPECIALITY CLINIC DIAGNOSTIC & RESEARCH CENTRE, CARE | COMPASSION | COMMITMENT

36-ए, कबीर नगर कालोनी, दुर्गाकुण्ड, जे.आर.एस. कोचिंग के आगे, राज स्वीट हाउस के सामने, वाराणसी।

Dr.(Prof.)J.K.Samaria. डा. एवं प्रोफेसर जे.के.सामरिया
MD, FNCCP, FIACMS, FCAI, FICP, D.Yoga, FCCP (USA), FICS
Ex. Prof. & Head, Department of Respiratory Diseases
Institute of Medical Sciences, BHU

Dr. K.Utsav Samaria. डा. कुमार उत्सव सामरिया
MBBS, MD (Respiratory Med), MICS, MNCCP (I), FCCP (USA) Ex. Registar
Department of Respiratory Diseases B.J. Medical, Ahmedabad
Consultant Pulmonologist & Bronchoscopy

Dr.Anubha jain
MBBS (Gold Medalist), M.D Paediatries (Gold Medalist) KGMU (Lucknow)

Dr.Gazal Jain
MBBS, DGO, DNB, Diploma in Gynaec Endoscopy (Germany)

Consultation Timing: Monday to Saturday-9-00 AM. to 7-00 PM | Sunday Closed 9-00 AM. to 2-00 PM
Mob : 9415244602, 8795300333 chestclinic.vns@g.mail.com

भगवान महावीर का अहिंसा का सिद्धांत और वर्तमान दौर

भगवान महावीर ने हजारों वर्ष पहले जिस अहिंसा का संदेश दिया, वह केवल एक धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि मानवता को दिशा देने वाला सार्वभौमिक जीवन-मूल्य है। उनका मानना था कि हर जीव में आत्मा है, इसलिए किसी को भी कष्ट पहुँचाना स्वयं को कष्ट देने के समान है। वर्तमान समय में जब दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध, हिंसा, असहिष्णुता और मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है, तब महावीर का यह संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। क्या अहिंसा आज के आधुनिक और संघर्षपूर्ण युग में भी समाधान बन सकती है? क्या हम अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में इसे अपना पा रहे हैं? इन्हीं महत्वपूर्ण सवालों पर हम काशी के प्रबुद्ध लोगों से समझने का प्रयास करते हैं कि महावीर का अहिंसा का सिद्धांत आज के दौर में हमें क्या नई दिशा दे सकता है।

अंशुमान राय

हिंसा कभी भी स्थायी समाधान नहीं दे सकती

आर.सी.जैन
अध्यक्ष
दिगम्बर जैन समाज काशी

भगवान महावीर ने मानव जीवन के लिए जो सर्वोच्च संदेश दिया, वह है — 'अहिंसा परमोधर्मः'। उनका मानना था कि किसी भी जीव को मन, वचन और कर्म से कष्ट पहुँचाना हिंसा है, और उससे बचना ही सच्चा धर्म है। यह सिद्धांत केवल धार्मिक शिक्षा नहीं, बल्कि एक गहरा मानवीय और वैश्विक मूल्य है।

आज के वर्तमान दौर में, जब दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध और संघर्ष की स्थिति बनी हुई है, महावीर का अहिंसा सिद्धांत और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। युद्ध केवल सीमाओं का संघर्ष नहीं होता, बल्कि इसमें हजारों निर्दोष लोगों की जान जाती है, परिवार उजड़ जाते हैं और मानवता को गहरा आघात पहुँचता है। ऐसे समय में महावीर का संदेश हमें याद दिलाता है कि हिंसा कभी भी स्थायी समाधान नहीं दे सकती। अहिंसा का अर्थ केवल हथियार न उठाना ही नहीं, बल्कि अपने विचारों और व्यवहार में भी शांति, सहिष्णुता और करुणा को अपनाना है। आज सोशल मीडिया और समाज में बढ़ती कटुता, नफरत और मानसिक तनाव भी एक प्रकार की हिंसा है, जिसे हमें समझने और रोकने की जरूरत है।

पर्यावरण के संदर्भ में भी महावीर का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रकृति का दोहन, जीव-जंतुओं को हानि पहुँचाना और संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग भी एक प्रकार की हिंसा ही है। यदि हम अहिंसा के मार्ग पर चलें, तो पर्यावरण संरक्षण और संतुलन अपने आप स्थापित हो सकता है।

आज की दुनिया को हथियारों से अधिक विचारों की शांति की आवश्यकता है। यदि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र महावीर के अहिंसा सिद्धांत को अपनाएं, तो युद्ध, संघर्ष और अशांति की जगह शांति, प्रेम और भाईचारे का वातावरण बन सकता है। इसलिए, वर्तमान समय में भगवान महावीर का अहिंसा सिद्धांत केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि विश्व शांति की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

महावीर के सिद्धांतों से समूचे विश्व में वैमनस्यता को कम किया जा सकता है

डा के के जैन
अध्यक्ष
दिगंबर जैन महासमिति वाराणसी संभाग

आधुनिक युग तनाव, टकराव, अशांति, अस्थिरता, शीत युद्ध, संघर्ष एवं विषमता का युग है। यदि हम भगवान महावीर के सिद्धांतों का अवलोकन करें, तो उनके द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, 'जियो और जीने दो', अपरिग्रह एवं सत्य जैसे सिद्धांतों को यदि हम अपने आचरण में अपनाएँ, तो आज विश्व में व्याप्त अस्थिरता एवं वर्चस्व की होड़ से उत्पन्न वैमनस्यता को कम किया जा सकता है। वर्तमान में हम तृतीय परमाणु विश्व युद्ध की कगार पर खड़े हैं। ऐसी विषम स्थिति में, जब पूरा विश्व युद्ध की आशंका से ग्रस्त है, परमाणु युद्ध की कल्पना ही मन और मस्तिष्क को झकझोर देती है।

परमाणु युद्ध से होने वाली क्षति केवल प्राणी मात्र तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह प्रकृति की संपूर्ण संरचना को तहस-नहस कर देगी, और इसका प्रभाव कई पीढ़ियों तक बना रहेगा। इस प्रकार की विध्वंसकारी स्थिति से बचने के लिए हमें भगवान महावीर के अहिंसा तथा 'जियो और जीने दो' के सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना होगा। इन्हीं सिद्धांतों के पालन से तृतीय परमाणु विश्व युद्ध जैसी विभीषिका को रोका जा सकता है।

अतः विश्व शांति की स्थापना के लिए हमें भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपने आचरण में अवश्य लाना होगा।

महावीर के अहिंसा सिद्धांत में ही दुनिया की सच्ची प्रगति निहित

संजय जैन
अध्यक्ष
भगवान पार्श्वनाथ जन्मस्थली

'अहिंसा परमो धर्मः' का संदेश देने वाले भगवान महावीर ने मानवता को ऐसा मार्ग दिखाया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना हजारों वर्ष पहले था। उनका अहिंसा का सिद्धांत केवल शारीरिक हिंसा से बचने तक सीमित नहीं था, बल्कि यह विचारों, वाणी और व्यवहार में भी करुणा, दया और संयम अपनाने की शिक्षा देता है।

वर्तमान दौर में जब दुनिया के कई हिस्सों में युद्ध, संघर्ष, आतंकवाद और सामाजिक वैमनस्य बढ़ रहा है, तब महावीर का अहिंसा का सिद्धांत और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। आज हिंसा केवल हथियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि शब्दों, सोशल मीडिया और विचारधाराओं के माध्यम से भी फैल रही है। ऐसे समय में महावीर का संदेश हमें सिखाता है कि सच्ची शक्ति विनाश में नहीं, बल्कि सहनशीलता और क्षमा में है। महावीर ने 'जीवो और जीने दो' का सिद्धांत दिया, जो आज के पर्यावरण संकट और जीव-जंतुओं के संरक्षण के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। अगर मानव समाज उनके इस सिद्धांत को अपनाए, तो न केवल आपसी संघर्ष कम होंगे, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलन भी बना रहेगा। आज आवश्यकता है कि हम महावीर के अहिंसा सिद्धांत को केवल पढ़ें या सुनें ही नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारें। जब हम अपने विचारों में सकारात्मकता, वाणी में मधुरता और कर्मों में दया लाएंगे, तभी एक शांतिपूर्ण और संतुलित समाज का निर्माण संभव होगा।

अंततः, महावीर का अहिंसा सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि सच्ची प्रगति वही है, जिसमें मानवता, शांति और सह-अस्तित्व का भाव निहित हो।

अहिंसा शांति का अत्यंत प्रभावी व्यावहारिक उपकरण

विजय कुमार जैन
अध्यक्ष
जैन मिलन, वाराणसी

अहिंसा केवल हिंसा न करना नहीं, बल्कि विचारों, वाणी और कर्म से किसी को कष्ट नहीं पहुंचना भी है। आज के हिंसक और तनावपूर्ण दौर में, यह शांति, संवाद, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय के लिये एक अत्यंत प्रभावी व्यावहारिक उपकरण है। यह कमजोरी नहीं बल्कि महात्मा गांधी द्वारा प्रमाणित एक शक्तिशाली नैतिक रणनीति है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आज के समय में जब विश्व तीसरे विश्वयुद्ध के कगार पर खड़ा है एक मात्र अहिंसा ही समाधान है जो विश्वशांति को बढ़ावा दे सकता है।

अहिंसा का उपयोग केवल व्यक्तिगत जीवन में नहीं बल्कि सामाजिक और राजनीतिक सुधार के लिये भी किया जा सकता है।

- युद्धों का समाधानः आज के समय में, जब परमाणु हथियार और युद्ध मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन गए हैं, महावीर भगवान की अहिंसा ही एकमात्र स्थायी समाधान है।
- सामाजिक परिवर्तन का साधनः अहिंसा का उपयोग केवल व्यक्तिगत जीवन में नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक सुधार के लिए भी किया जा सकता है
- पर्यावरण संरक्षणः अहिंसा का सिद्धांत केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और पृथ्वी पर सभी प्राणियों के प्रति दया का संदेश देता है
- आंतरिक शक्तिः यह अहिंसा के माध्यम से क्रूरता को हराने की शक्ति है, जो आज के समय में मानसिक शांति के लिए बहुत जरूरी है। अहिंसा एक जीवनशैली वर्तमान में, अहिंसा को अपने व्यवहार में अपनाना आवश्यक है। हमें क्रोध, प्रतिशोध और ईर्ष्या जैसी भावनाओं से बचकर प्रेम और भाईचारा बढ़ाना चाहिए।

भगवान महावीर की सीख

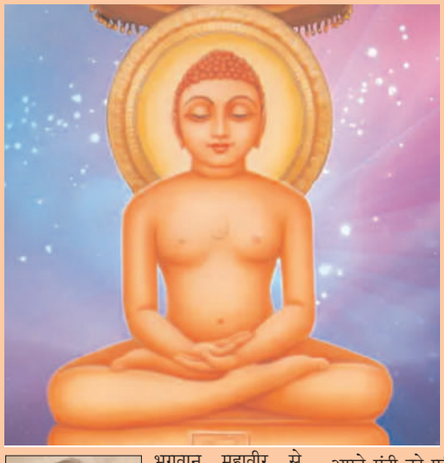

सिंघई सौरभ जैन
दिगम्बर जैन समाज काशी

भगवान महावीर से जुड़ा प्रसंग है। महावीर स्वामी से मिलने, उनके दर्शन करने के लिए काफी लोग रोज पहुंचते थे। एक राजा भी महावीर स्वामी के दर्शन के लिए आने लगा।

राजा रोज महावीर के सामने कीमती आभूषण और अन्य उपहार लेकर पहुंचता था। स्वामी जी उस राजा को और उसके आभूषण को देखकर कहते थे कि इन्हें तुरंत गिरा दो। राजा महावीर भगवान की बात मानकर सारे उपहार वहीं गिरा देता था। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा।

एक दिन राजा को ये बात बहुत अजीब लगी, वह सोचने लगा कि मैं रोज इतने कीमती उपहार लेकर जाता हूं, लेकिन महावीर जी उन्हें गिराने के लिए क्यों कहते हैं?

जब राजा को महावीर जी की ये बात समझ नहीं आई तो उसने अपने मंत्री को पूरी बात बताई। मंत्री बहुत विद्वान था, उसने कहा कि आप इस बार खाली हाथ जाएं। अपने साथ कोई उपहार लेकर न जाएं।

राजा अगले दिन स्वामी जी के पास खाली हाथ पहुंच गया। इस बार भगवान महावीर ने कहा कि आज तुम खुद को गिरा दो।

राजा को ये बात समझ नहीं आई, उसने महावीर से पूछा कि आप कृपया मुझे ठीक से समझाएं, आप क्या कहना चाहते हैं।

महावीर स्वामी की सीख

महावीर स्वामी ने कहा कि आप राजा हैं और आप ये सोचते हैं कि किसी को भी धन देकर खुश किया जा सकता है, आपको अपने धन, राज्य और पद का अहंकार है। मैं आपसे रोज इसी अहंकार को गिराने की बात कह रहा हूं। आपको अहंकार नाम की बुराई को तुरंत छोड़ देना चाहिए। जब आप अहंकार त्याग देंगे तो ये आपके और आपकी प्रजा के जीवन में सुख-शांति बनी रहेगी।

राजा को बात समझ आ गई और राजा ने महावीर भगवान के सामने घमंड त्यागने का संकल्प ले लिया।

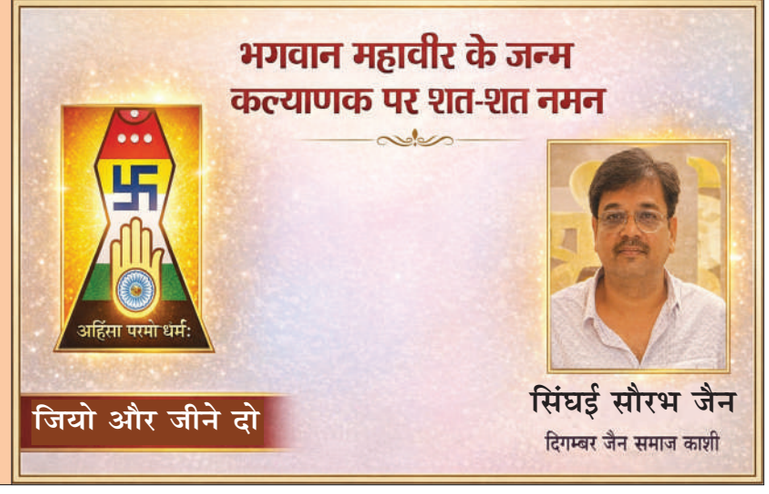

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

ऋषभ चन्द्र जैन

अध्यक्ष

दिगम्बर जैन समाज काशी

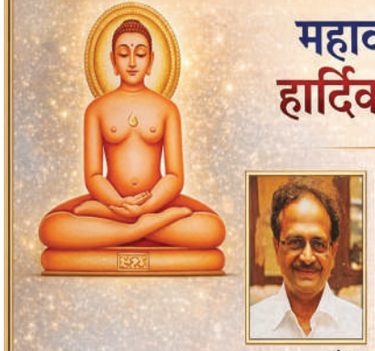

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

ऋषभ चन्द्र जैन

अजीत कुमार जैन

चंदा कुमार जैन

ARC Builders & Developers (P) Ltd.

ARIHANT Complex, Sigra Varanasi

Phone: 0542-2220310

Email ID: arcjainvaranasi@gmail.com

Jainvns@Yahoo.com.

अनेकांत वाद का सिद्धांत

संकलनः आदीश जैन

भगवान महावीर का अनेकांतवाद बताता है कि जब तक हम सत्य के सभी पहलुओं को नहीं देख लेते तब तक हमें अपनी राय को अंतिम नहीं मानना चाहिये क्योंकि सत्य बहुस्तरीय होता है। यह सिद्धांत मानता है कि "मैं सही हूँ" की धारणा गलत है क्योंकि हर दृष्टिकोण आंशिक सच हो सकता है। इसी को प्रतिपादित निम्न कहानी से किया गया है।

छः अंधे व्यक्ति और हाथी

जैन दर्शन का सिद्धांत है कि किसी भी वस्तु या सत्य को पूरी तरह से समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को जानना आवश्यक है। अनेकांतवाद की हाथी और अंधे व्यक्तियों की प्रसिद्ध कहानी यह सिखाती है कि सत्य बहुआयामी होता है और हमारा दृष्टिकोण सीमित हो सकता है।

एक गाँव में छह अंधे व्यक्ति रहते थे जो हाथी के बारे में जानना चाहते थे। वे एक दिन हाथी के पास गए। सभी ने हाथी के विभिन्न अंगों को अलग-अलग छुआ और अपना अनुभव साझा किया। जो इस प्रकार हैः-

1. पैर छूने वाले ने कहाः "हाथी एक खंभे की तरह है"।
2. सूंड छूने वाले ने कहाः "यह एक मोटे डंडे या सांप जैसा है"।
3. पेट छूने वाले ने कहाः "यह एक बड़े जार या दीवार जैसा है"।
4. कान छूने वाले ने कहाः "यह एक पंखे जैसा है"।
5. पूंछ छूने वाले ने कहाः "यह एक रस्सी जैसा है"।
6. दांत छूने वाले ने कहाः "यह एक भाले या तलवार जैसा है"।

उन्होंने आपस में बहस शुरू कर दी क्योंकि हर कोई अपने अनुभव को ही सही मान रहा था। तब एक बुद्धिमान व्यक्ति ने उन्हें समझाया कि तुम सब सही हो, लेकिन केवल आंशिक रूप से। तुमने हाथी के केवल एक हिस्से को छुआ है, पूरे हाथी को नहीं।

जैसे हाथी के विभिन्न अंगों को छूकर अंधों ने अलग-अलग निष्कर्ष निकाला, वैसे ही सत्य के भी कई पहलू होते हैं। यह कहानी हमें सिखाती है कि हमें दूसरों के दृष्टिकोण का भी सम्मान करना चाहिए, क्योंकि उनका 'सत्य' भी उनके अनुभव पर आधारित हो सकता है। अपने ही दृष्टिकोण को पूर्ण में सही मानना गलत है। सच किसी एक पहलू से बहुत बड़ा हो सकता है। यह कहानी हमें सहिष्णुता और समझदारी सिखाती है। इसी को जैन धर्म में अनेकांतवाद कहा गया है।

महावीर जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

प्रदीप इण्डस्ट्रीज

प्रदीप चन्द जैन, ऊषा जैन

प्रदीप कंपनी

प्रतीक जैन, सारिका जैन, प्रांशु जैन

प्रदीप कैमिकल्स

प्रसन्न जैन, रोली जैन, आर्श्य जैन, आश्नेय जैन, आशना जैन

वाराणसी की जैन संस्कृति और तीर्थंकर महावीर

प्रो. सुमन जैन
प्रोफेसर- हिन्दी
महिला महाविद्यालय
का.हि.वि.वि.वा.

वाराणसी इस नामकरण से इतिहास में भी यह स्वीकृति प्राप्त है कि वरूण और असी (अस्सी) इन दो नदियों के मध्य स्थित होने से काशी नगरी का नाम वाराणसी भी है। जैन महाकवि बनारसीदास ने हिंदी साहित्य की प्रथम आत्मकथा 'अर्धकथानक' में सत्रहवीं शताब्दी में लिखा है- ''गंगमाही आई धंसी है नदी वरूण असी।
बीच बसी बनारसी नगरी बखानी है।''

वाराणसी से ही 'बनारस' यह नाम प्रसिद्ध आ। प्रमुख प्राकृत जैन आगमों और अन्य जैन ग्रंथों में 'वाराणसी' इस शब्द के स्थान पर 'वानारसी' यह शब्द मिलता है। 'बनारस' शब्द की व्युत्पति की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। वाराणसी जनपद जैन संस्कृति एवं परंपरा का प्राचीन काल से प्रमुख केंद्र रहा है। वाराणसी के पुरातात्विक उत्खनन से यह बात सर्व सिद्ध है। आगम और आगमेतर जैन साहित्य में वाराणसी की अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। 'ज्ञात धर्म कथा' की धर्म कथाएं वाराणसी से संबंध रखती हैं। 'प्रज्ञापना सूत्र,' 'कल्पसूत्र,' 'उपासक दशांग,' 'उत्तराध्ययन चूर्णी,' 'अंतकृद्दशा,' 'निर्यावलिका,' विभिन्न आगमों में वाराणसी का वर्णन है। इस तरह से जैन धर्मावलंबियों के लिए भी काशी अत्यंत पवित्र और प्रिय नगरी है।

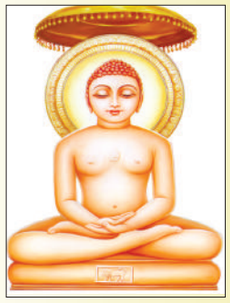

काशी की भूमि पर जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में चार तीर्थंकरों के पंचकल्याणक में गर्भ, जन्म, दीक्षा और ज्ञानकल्याणक से यह भूमि पवित्र है। इसलिए संपूर्ण विश्व के जैन तीर्थयात्री काशी महातीर्थ के वंदन-पूजन हेतु काशी पधारते हैं। जैन धर्म के सप्तम् तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जिनकी जन्मभूमि भदैनी मुहल्ले में गंगातट पर स्थित जैन घाट है। अष्टम् तीर्थंकर चंद्रमहाप्रभु अपनी जन्मभूमि बनारस से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर गंगातट पर चंद्रावती ग्राम है। ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांशनाथ महाप्रभु जिनकी जन्मभूमि सारनाथ से सटा सिंहपुर ग्राम अर्थात हीरामनपुर गांव है। तेइसवें तीर्थंकर महाप्रभु पार्श्वनाथ है, जिनकी जन्मभूमि बनारस शहर के मध्य भेलूपुर मुहल्ला है, जहां तीन भव्य जिनालय सुशोभित हैं।

तीर्थंकर महावीर के समय कौशल सहित अट्ठारह गणराज्यों का उल्लेख जैन साहित्य में प्राप्त होता है। ये सभी गणराज्य महावीर की अनुयायी थे और सभी महावीर का निर्वाणोत्सव मनाने के लिए उनके निर्वाण के उपरांत पावा नगरी में एकत्रित हुए थे। तत्कालीन काशी नरेश जितशत्रु ने वाराणसी में तीर्थंकर महावीर की वंदना अर्चना किया था। इस नगर के बाहर कोष्ठक नामक चैत्य में तीर्थंकर महावीर का कई बार समोशरण भी आया था। इसी नगरी के चौबीस कोटि मुद्राओं के धनी 'चुलनी पिता' नामक सेठ और सुरादव नामक धनाढ्य गृहस्थ महावीर के समय के प्रमुख दस श्रमणोपासकों में से थे। यहां का राजा 'लक्ष' को काम महावन चैत्य में महावीर ने अपना शिष्य स्वीकार किया था। इसी नगरी के एक अन्य राजा 'शंख' ने भी महावीर से जिन दीक्षा ग्रहण किया था। वाराणसी की राजकुमारी उनकी परम भक्त थी। दिगंबर परंपरा के तिलायोपर्णान्त, उत्तर पुराण, आ. पदमकीर्ति कृत 'पासणाह चरित्र,' वादिराज कृत आ. सकलकीर्ति कृत पार्श्वनाथ चरित्र में तथा ब्र. नेमीदत्त आराधना कथा-कोश में भी वाराणसी का चित्रण मिलता है।

''तेइसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्मस्थान तो वाराणसी है पर उनका भ्रमण और उपदेश क्षेत्र दूर-दूर तक विस्तीर्ण था। इसी उपदेश क्षेत्र में वैशाली नामक सुप्रसिद्ध नगर भी आता है। जहां महावीर जन्में।''

महावीर ने बिल्कुल नई परंपरा को नहीं चलाया उन्होंने अपने पूर्ववर्ती तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की धर्म परंपरा को ही पुनर्जीवित किया है। महावीर के जीवन और दर्शन को समझने के लिए पार्श्वनाथ की परंपरा को समझना इतिहास और शोध का सकारात्मक पक्ष है।

2625 वीं महावीर त्रयोदशी

(भगवान महावीर जन्म कल्याणक)

की हार्दिक बधाई और शुभकामनायें

जैन मिलन वाराणसी

क्षेत्र संख्या- 1/202

E-Mail : jainmilanvns@gmail.com

अध्यक्ष
वीर विजय कुमार जैन

मंत्री
वीर डा0 विवेकानंद जैन

उपाध्यक्ष
वीर डा0 आनंद जैन

कोषाध्यक्ष
वीर अनिल कुमार जैन

सहः मंत्री
वीर सौरभ जैन

हम नहीं दिगम्बर, श्वेताम्बर, तेरहपंथी, स्थानकवासी, हम एक पंथ के अनुयायी, हम एक देव के विश्वासी।।

ऋषभदेव का षट्कर्म उपदेश

प्रो. अनेकांत कुमार जैन
जैन दर्शन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

जैन आगमों के अनुसार, काल चक्र के मुख्य दो विभाग हैं। एक उत्सर्पिणी काल और दूसरा अवसर्पिणी काल । इनके भी क्रमशः छ ह - छ ह विभाग हैं। दोनों ही काल में क्रमशः धर्म की वृद्धि और हानि होती है। जैन मान्यता है कि वर्तमान में अवसर्पिणी काल का पंचम आरा चल रहा है, तीसरे आरे के अंत में जब भोग भूमि समाप्त हो रही थी और कर्मभूमि का आरंभ हो रहा था, तब अंतिम कुलकर नाभिराय और उनकी पत्नी मरुदेवी के यहां प्रथम तीर्थंकर वृषभदेव हुए। जैन ग्रंथों में आदिनाथ, ऋषभदेव, आदिब्रह्मा, सनातन आदि एक हजार नामों से इनकी स्तुति की गई है।

उनका जन्म चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में नवमी के दिन अयोध्या में हुआ, जो इनकी राजधानी थी। ये जन्म से ही मति, श्रुत तथा अवधि इन तीन ज्ञान से युक्त थे। जैन मान्यतानुसार, पहले लोग कर्म नहीं करते थे, भोगसामग्री कल्पवृक्षों से मिलती थी।

कर्मभूमि प्रारंभ होते ही कल्पवृक्षों ने भोगसामग्री देना बंद कर दिया था, जिससे जनता में त्राहि-त्राहि मच गई। जनता राजा नाभिराय के पास पहुंची। राजा ने कहा, इसका समाधान राजकुमार ऋषभदेव करेंगे। राजकुमार ने सभी की आजीविका चलाने के लिए षट्कर्म का उपदेश दिया। यह छह कर्म इस प्रकार है :

1. असि : असि का अर्थ तलवार । जो देश की रक्षा के लिए तलवार लेकर देश की सीमा पर खड़े रहकर देश की रक्षा करते हैं।

2. मसि: मुनीमी करने वाले, लेखा- जोखा रखने वाले।

3. कृषि : जीव हिंसा का ध्यान रखते हुए खेती व पशुपालन करने वाले ।

4. विद्या: सभी प्रकार के शैक्षणिककार्य करने वाले ।

5.शिल्प: स्वर्णकार, कुम्हार, चित्रकार, कारीगर, दर्जी, नाई, रसोइया, मूर्तिकार, मकान, मंदिर आदि के मानचित्र बनाने वाले।

6. वाणिज्य : सात्विक और अहिंसक व्यापार, उद्योग करने वाले।

इस उपदेश से लोग कर्ममय जीवन जीने लगे। कुछ समय पश्चात राजकुमार ऋषभदेव का विवाह नंदा एवं सुनंदा नामक दो कन्याओं से हुआ। पिता ने राजकुमार ऋषभदेव का राजतिलक कर दिया। राजा ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों में ब्राह्मी को अक्षर विद्या एवं सुंदरी को अंकविद्या सिखाई। इनके ज्येष्ठ पुत्र भरत ने पृथ्वी के छह खंडों पर एकक्षत्र राज्य किया। ऋषभदेव का चरित श्रीमद्भागवत के पंचम स्कंध में वर्णित है। नौवीं शती में आचार्य जिनसेन ने ऋषभदेव के जीवन पर आदिपुराण की रचना की है।

ऋषभ देव जी ने चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की नवमी को दीक्षा धारण की और वन में तपस्या की। फिर जीवों को संसार सागर से पार होने का उपदेश करते हुए पृथ्वी पर विहार किया और 'कृषि करो या ऋषि बनो' का उपदेश

दिया। कहते हैं दीक्षा के पश्चात वे छह मास तक निश्चल कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानस्थ रहे। उन्हें फाल्गुन कृष्ण पक्ष एकादशी के दिन केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात वह कैलाश पर्वत पर ध्यानारुढ़ हुए और माघ कृष्ण चतुर्दशी को मोक्ष प्राप्त हुआ। वे ही जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव कहलाए।

- साभार

भगवान् महावीर के अनमोल वचन

- किसी आत्मा की सबसे बड़ी गलती अपने असल रूप को ना पहचानना है, और यह केवल आत्म ज्ञान प्राप्त कर के ठीक की जा सकती है।

- शांति और आत्म-नियंत्रण अहिंसा है।

- प्रत्येक जीव स्वतंत्र है. कोई किसी और पर निर्भर नहीं करता।

- भगवान का अलग से कोई अस्तित्व नहीं है। हर कोई सही दिशा में सर्वोच्च प्रयास कर के देवत्त्व प्राप्त कर सकता है।

- प्रत्येक आत्मा स्वयं में सर्वज्ञ और आनंदमय है। आनंद बाहर से नहीं आता।

- हर एक जीवित प्राणी के प्रति दया रखो। घृणा से विनाश होता है।

- सभी जीवित प्राणियों के प्रति सम्मान अहिंसा है।

- सभी मनुष्य अपने स्वयं के दोष की वजह से दुखी होते हैं, और वे खुद अपनी गलती सुधार कर प्रसन्न हो सकते हैं।

- अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।

- एक व्यक्ति जलते हुए जंगल के मध्य में एक ऊँचे वृक्ष पर बैठा है। वह सभी जीवित प्राणियों को मरते हुए देखता है। लेकिन वह यह नहीं समझता की जल्द ही उसका भी यही हस्र होने वाला है. वह आदमी मूर्ख है।

- स्वयं से लड़ो, बाहरी दुश्मन से क्या लड़ना? वह जो स्वयम पर विजय कर लेगा उसे आनंद की प्राप्ति होगी।

- आपकी आत्मा से परे कोई भी शत्रु नहीं है। असली शत्रु आपके भीतर रहते हैं, वो शत्रु हैं क्रोध, घमंड, लालच, आसक्ति और नफरत।

प्रेरक प्रसंग : कैसे पाएं अधोपतन से मुक्ति

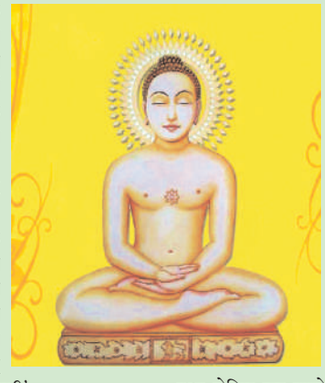

वर्धमान महावीर एक महान संत थे, जिन्होंने जैन धर्म की स्थापना की थी। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने इच्छाओं को जीत लिया था। इसीलिए उन्हें महावीर भी कहा जाता है।

एक बार उनसे उनके एक शिष्य ने प्रश्न किया, 'गुरुदेव, मनुष्य के अधोपतन का क्या कारण है और उससे अपनी मुक्ति के लिए क्या किया जाना चाहिए?'

महावीर बोले, 'यदि कोई कमंडलु भारी हो और उसमें पानी भी अधिक मात्रा में समा सकता हो, तो क्या वह खाली अवस्था में छोड़ा जाने पर डूबेगा?'

'कदापि नहीं,' उस शिष्य ने जवाब दिया। उसमें यदि कोई दुर्गुण रूपी छिद्र हुआ तो समझ लो कि वह टिकने वाला नहीं। क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, अहंकार ये सारे दुर्गुण मनुष्य को डुबोने में कारणीभूत हो सकते हैं, इसलिए हमें सदा यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी जीवन रूपी कमंडलु में कोई दुर्गुण रूपी छिद्र तो जन्म नहीं ले रहा है और यदि हमने उसी समय उसे उभरने नहीं दिया तो जान लो कि हमारा जीवन निष्कंटक रहेगा और हमें हर चीज सुलभता से प्राप्त होगी।'

भगवान महावीर की यह बात सुनकर उनके शिष्य को पहले तो विश्वास नहीं हुआ लेकिन जब उसने इस पर गौर किया तो उसे लगा कि उसके गुरु ठीक कह रहे हैं।

'यदि उसकी दाईं ओर एक छिद्र हो तो क्या उस अवस्था में भी वह तैर सकता है?'

'नहीं, वह डूब जाएगा।'

'और छिद्र बाईं ओर हो तो?'

'छिद्र बाईं ओर हो या दाईं ओर, छिद्र कहीं भी हो, पानी उसमें प्रवेश करेगा और अंततः वह डूब ही जाएगा।'

'तो सब यह जान लो कि मानव जीवन भी कमंडलु के ही समान है।

धार्मिक सिद्धांतों में बदलाव धर्म की प्रासंगिता बनाये रखता है...

अनिल कुमार जैन (संरक्षक संकल्प)

आज हम जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती मना रहे है। वैसे भगवान महावीर के पूर्व भी जैन धर्म में 23 तीर्थंकर हुए हैं, किंतु महावीर के सिद्धांत व स्वयं वे विश्व भर में जितने लोकप्रिय हुए उतना अन्य कोई नहीं हुआ।

इसका मुख्य कारण है कि जैन धर्म का जितना प्रचार प्रसार महावीर स्वामी के काल में हुआ उतना अन्य किसी काल में नहीं हुआ। अपने काल की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों के अनुरूप उन्होंने अपने सिद्धांतों को सरल, सहज एवं धर्म की ओर आकर्षित करने वाला बनाया। जैन धर्म के प्रसार में उनके योगदान के कारण यदि यह कहा जाय कि जैन धर्म व महावीर जैन एक दूसरे के पर्याय हैं तो यह अतिशयोक्ति न होगी। किंतु समय परिवर्तनशील है, देशकाल व परिस्थितियों के अनुसार समाज की मान्यताएं, आवश्यकताएं, सिद्धांत व मानसिकता भी बदलती रहती है। आज से 2500 वर्ष पूर्व भगवान महावीर के उपदेश उस समय की परिस्थितियों के अनुरूप थे वे उस काल के समाज की उन्नति व मानव चरित्र के उत्थान में अपनी अहम् भूमिका निभाई। वैसे आज भी उनकी प्रासंगिकता में कमी नहीं आया है, किंतु अब उसमें कुछ और सरलता कुछ और परिवर्तनशीलता की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

हो। मसलन अहिंसा की बात करें तो जैन धर्म के अनुसार "जीव मात्र पर दया करो।" हत्या या मारपीट तो दूर की बात है, वाणी से भी किसी का दिल मत दुखाओ, यह भी हिंसा है। किंतु इधर कुछ समय से समाज के चारित्रिक स्तर व सोच में काफी गिरावट आयी है, लोगों की आस्थाएं व मान्यताएं बदल गयी है। लोग अपने किए का प्रतिफल तुरंत चाहते हैं। भौतिकता का युग है, हर और प्रतिस्पर्धा का वातावरण है जात पात व दुराचार का बोलबाला है। ऐसे में अहिंसा की परिभाषा भी बदली है। एक विद्वान के अनुसार यदि समूह की रक्षा के लिए कुछ को कुर्बान भी करना पड़े तो यह अहिंसा है, इसी प्रकार ऐसा सत्य भी न करें जिससे समाज में विप्लव की आशंका हो । तात्पर्य यह कि समय के अनुरूप यदि हम अपने धर्म सिद्धांतों व विचारों में परिवर्तन कर सबके अनुरूप व सहज नहीं बनाएंगे तो और लोगों का तो जुड़ना तो - दूर अपने लोग भी अलग हो जाएंगें। हिंदू धर्मावलंबी हरिजनों का बौद्ध या ईसाई हो जाना इसका जीता जागता उदाहरण है।मैं आदरपूर्वक क्षमा मांगते हुए अपने धर्म गुरुओं, समाज के प्रबुद्ध व प्रतिष्ठित सज्जनों से अनुरोध करता हूं कि एक बार मिल-बैठकर विचार करें कि जैन धर्म में आज की सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों के अनुरूप किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है. किस प्रकार इसको और सहज सुंदर व सरल बनाया जाये। हमारे धर्मगुरुओं को भी अपने आहार, विहार व नित्य प्रति के जीवन, खानपान आदि में धार्मिक मान्यताओं को और अधिक उदार बनाना होगा ताकि महावीर स्वामी के काल में जैन धर्म को मिली लोकप्रियता के इतिहास को हम दोहरा सके। इस समय समस्त विश्व जिस प्रकार से हिंसा, स्वार्थ, अनैतिकता की अंधी दौड़ में शामिल है, उसमे महावीर के सिद्धांत (1) सत्य, (2) अहिंसा, (3) अचौर्य, (4) ब्रह्मचर्य, (5) अपरिग्रह हो विश्व का कल्याण कर सकते हैं, किंतु इसके लिए फिर किसी महावीर को धरती पर जन्म लेना होगा जो आज की बदली परिस्थितियों में अपने विचारों को बदले हुए परिप्रेक्ष्य में पुनः सबके सामने रखकर विश्व में अमन-चैन व शांति गुंजायमान कर सके।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

भगवान महावीर के बारे में जानिए कुछ रोचक बातें

भगवान महावीर का निर्वाणकाल(जन्म) 527 ई.पू. है। सन् 1974-75 ई. में भगवान महावीर की 2500वीं निर्वाण शती मनाई गई थी। भगवान महावीर को वर्धमान, आदिनाथ, अर्हत, जिन, निर्ग्रंथ, अतिवीर आदि नामों से भी जाना जाता है। भगवान महावीर की मां का नाम त्रिशला देवी और पिता सिद्धार्थ थे। वह ज्ञातृ वंशीय क्षत्रिए थे। उनका गोत्र काश्यप था। सिंह राशि में जन्में महावीर का वर्ण सुवर्ण था। जैन धर्म को 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी कार्तिक अमावस्या को दीपावली के दिन बिहार शरीफ़ से 8 किमी दक्षिण-पूर्व पावापुरी निर्वाण(मृत्यु) प्राप्त किया था। कल्पसूत्र के अनुसार भगवान महावीर 72 वर्ष जीवित रहे। उत्तर पुराण के अनुसार 72वें वर्ष में कुछ माह तक ही वह जीवित रहे। इस दृष्टि से देखा जाए तो जन्मकाल 527+72= 599 ई. पू. हुआ। भगवान महावीर का 2600 वां जन्म कल्याण महोत्सव वर्ष 2001 ई. यानी 2001+599= 2600 में मनाया जाएगा। कल्पसूत्र, निर्वाण भक्ति और उत्तर पुराण आदि रचनाओं में भगवान महावीर की जन्मतिथि चैत्र शुक्ल त्रयोदशी की रात्रि में हुआ था। जिसका उल्लेख इन जैन धर्मग्रंथो में मिलता है। जब महावीर का जन्म हुआ तब चंद्रमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का उपयोग कर रहा था। आधुनिक काल गणना के अनुसार भगवान महावीर का जन्म 27 मार्च, सोमवार 598 ई.पू. माना जाता है। आधुनिक इतिहासकारों और जैन विद्वानों ने भी प्राचीन जैन शास्त्रों का गहन अध्ययन कर स्पष्ट किया कि भगवान महावीर का जन्म नालंदा से पश्चिम में दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित कुंडलपुर अथवा बिहार के मुंगेर जिले में लछुवाड़ गांव से दक्षिण में नदी किनारे क्षत्रिए कुंड में हुआ होगा। ये दोनों ही स्थान भगवान महावीर के समय स्थित मगध राज्य की सीमा के अंतर्गत आते हैं।

प्रेरणादायक कहानीः 'सच्ची जीत किसकी?'

बहुत समय पहले भगवान महावीर अपने उपदेशों के माध्यम से लोगों को अहिंसा, सत्य और करुणा का मार्ग दिखा रहे थे। जहां भी वे जाते, लोग उनके विचारों से प्रभावित होकर बदलने लगते थे।

एक नगर में शूलपाणि नाम का एक क्रूर डाकू रहता था। वह लोगों को लूटता, मारता और आतंक फैलाता था। पूरे इलाके में उसका नाम सुनते ही लोग डर जाते थे। जब उसे पता चला कि महावीर जी उसके क्षेत्र में आने वाले हैं, तो उसने ठान लिया कि वह उन्हें भी डराकर भगा देगा।

जब महावीर जी उस जंगल के रास्ते से गुजर रहे थे, शूलपाणि तलवार लेकर उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसने गुस्से में कहा,

'तुम्हें डर नहीं लगता? यहां से कोई भी जीवित नहीं जाता!'

महावीर जी शांत भाव से बोले,

'डर तो उसे लगता है जो गलत करता है। मैं किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता, इसलिए मुझे डर कैसा?'

यह सुनकर शूलपाणि और क्रोधित हो गया। उसने महावीर जी को डराने की कोशिश की, जोर-जोर से चिल्लाया, यहां तक कि उन्हें चोट पहुँचाने की धमकी दी। लेकिन महावीर जी बिल्कुल शांत रहे—उनके चेहरे पर न क्रोध था, न भय।

उनकी इस अद्भुत शांति और करुणा को देखकर शूलपाणि का मन धीरे-धीरे बदलने लगा। उसने पहली बार महसूस किया कि ताकत सिर्फ डराने या हिंसा करने में नहीं होती, बल्कि अपने मन को जीतने में होती है।

आखिरकार उसका दिल पिघल गया। वह महावीर जी के चरणों में गिर पड़ा और बोला,

'मैंने जीवन भर गलत काम किए। आज मुझे समझ आया कि असली शक्ति क्या है। मुझे सही मार्ग दिखाइए।'

महावीर जी ने उसे क्षमा कर दिया और अहिंसा का मार्ग अपनाने की शिक्षा दी।

उस दिन के बाद शूलपाणि ने हिंसा छोड़ दी और एक अच्छा इंसान बन गया।

सीख : अहिंसा और शांति सबसे बड़ी शक्ति है। दूसरों को हराना आसान है, लेकिन अपने क्रोध और अहंकार को हराना ही सच्ची जीत है।प्रेम और करुणा से सबसे कठोर दिल भी बदला जा सकता है। यह कहानी हमें सिखाती है कि आज के समय में भी, जब दुनिया में तनाव और संघर्ष बढ़ रहे हैं, तब भगवान महावीर का अहिंसा का संदेश ही सच्चा समाधान है।

InstaRoof
गर्मियों में ठंडक,
बारिश में दृढ़ता,
जाड़े में गर्माहट।
RINAC
InstaRoof रूफिंग पैनल
तापमान को लगभग 10-12 डिग्री तक कम करता है।
50 mm
88 mm
2625 वीं महावीर त्रयोदशी (भगवान महावीर जन्म कल्याणक) की हार्दिक बधाई और शुभकामनायें ।
जैन एजेंसीज
17 ए नील कॉटेज, मलदहिया, वाराणसी - 221002
9336902686 8840461145 9648088882
jainagencies3@gmail.com